कम्प्यूटर की दुनिया में हिन्दी यूनिकोड को हम मंगल फॉन्ट सॉफ्टवेयर के नाम से भी जानते हैं। इसका नाम मंगल फॉन्ट सॉफ्टवेयर इसलिए पड़ा क्योंकि जब हम इसका उपयोग करते हैं तो यह अपने आप ही मंगल फॉन्ट चुन लेता है। हालांकि मंगल फॉन्ट सॉफ्टवेयर में कई की-बोर्ड ले-आउट मिलते हैं लेकिन इसका मानक की-बोर्ड ले आउट इनस्क्रिप्ट निर्धारित किया गया है। जब हम अपने पीसी में यूनिकोड सक्रिय करते हैं तो इनस्क्रिप्ट लेआउट हमें अपने आप प्राप्त होता है। लेकिन कृतिदेव लेआउट पर टाइपिंग करने में समस्या आती है क्योंकि इनस्क्रिप्ट लेआउट, कृतिदेव ले आउट पूरी तरह से अलग हैं। कृतिदेव यूजर्स भी यूनिकोड का उपयोग कर सकें इसलिए हिन्दी यूनिकोड में रेमिंगटन कीबोर्ड की सुविधा दी गई है। यह कृतिदेव ले आउट की तरह ही होता है, थोड़ा सा अंतर होता है जो आसानी से सीखा जा सकता है। यूनिकोड हिन्दी टाइपिंग सीखने के दो रास्ते हैं - 'इनस्क्रिप्ट ले आउट' और अन्य 'लेआउट'। अगर हम हिन्दी टाइपिंग नहीं जानते तो 'इनस्क्रिप्ट लेआउट' पर टाइपिंग सीखनी चाहिए क्योंकि यह एक मानक की बोर्ड होने के साथ-साथ आसानी से उपलब्ध हो जाता है। इसके लिए किसी प्रकार के एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर की आवश्यकता नहीं होती। आज कम्प्यूटर की दुनिया में बहुत से ऑपरेटिंग सिस्टम हैं इसलिए हर ऑपरेटिंग सिस्टम में यूनिकोड active करने की ~~तरीका~~ विधि अलग-अलग है पर यूनिकोड उपयोग करने का तरीका यानि की-बोर्ड ले आउट सभी ऑपरेटिंग सिस्टम में समान होता है।

यूनिकोड वर्णों को एक कोड देता है न कि ग्लिफ (glyph) को, जहाँ तक सम्भव हो यूनिकोड भाषाओं का एकीकरण करने का प्रयत्न करता है। इसी नीति के तहत सभी पश्चिमी यूरोपीय भाषाओं को लैटिन के अन्तर्गत समाहित किया गया है, स्लाविक भाषाओं को सिरिलिक (cyrilic) के अन्तर्गत और हिन्दी, संस्कृत, मराठी, नेपाली, सिन्धी, कश्मीरी आदि के लिए "देवनागरी" नाम